फ़िराक को सही नज़र और धैर्य से समझने की है जरूरत : अक़ील रिज़वी

'फ़िराक और हिन्दुस्तानी तहज़ीब' पर वक्ताओं ने किया विमर्श

वर्धा,30 अगस्त 2012; फ़िराक की शायरी और व्यक्तित्व के अनेक रूप और रंग हैं। फ़िराक बड़े शायर और दानिश्वर थे इसमें कोई शक नहीं] उन्हें समझने के लिए सही नज़र और धैर्य की जरूरत है। फ़िराक साहब को अपनी बात कहने का नायाब तरीका हासिल था। वे सादगी पसंद अध्यापक तो थे ही, साथ ही तर्कसंगत और वस्तुनिष्ठ ढंग से चीजों को देखने के कायल भी। हालांकि उनके अपने पूर्वाग्रह भी थे।

उक्त विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा के इलाहाबाद क्षेत्रीय केंद्र द्वारा फिराक गोरखपुरी के जन्मदिवस के अवसर पर **'फ़िराक और हिंदुस्तानी तहज़ीब'** विषय पर आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए **प्रो.अक़ील रिज़वी** ने व्यक्त किए। गोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि **प्रो.ओ.पी. मालवीय** ने कहा कि गालिब, फ़ैज और फ़िराक की जमीन एक है। तीनों शायरों ने अपनी गज़लों, नज्मों और रूबाइयों से हिन्दुस्तानी तहज़ीब को समृद्ध किया। उन्होंने फ़िराक के व्यक्तित्व के अनेक अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज के खड़ी बोली के कवियों द्वारा हिन्दुस्तानी तहज़ीब और परम्परा से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। फ़िराक की शायरी पर अपनी बात केंद्रित रखते हुए बीज वक्तव्य में **प्रो.ए.ए. फातमी** ने कहा कि गालिब, वली, इकबाल, चकबस्त और फ़िराक ने हिन्दुस्तानी तहज़ीब को अपनी शायरी में नुमाया किया। फ़िराक की शायरी में अंग्रेजी की रोमांटिक पोयट्री और मीर की आशिकी का जबरदस्त प्रभाव है। उनके यहां हिन्दुस्तानी तहज़ीब का दायरा गैरमामूली है। उनकी शायरी में घर-आंगन, बावर्ची का खाना बनाना, बच्चे का झूला, बर्तन मांजती स्त्री सहित ठेठ स्थानीयता अपने चटक रंग में मिलती है। उनकी स्थानीयता का भी वैश्विक संदर्भ है। उनकी **'धरती की करवट' 'हिंडोला'** जैसी नज्में विश्व कविता को समृद्ध करने वाली हैं। इस दौरान **रमेश चन्द्र द्विवेदी** ने फ़िराक के व्यक्तित्व को अपनी स्मृतियों के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए कहा कि फ़िराक को समझना जितना मुश्किल है उनको गलत समझना उतना आसान। असाधारण व्यक्तियों के कार्य को नहीं

समझने वाले हमेशा उन्हें गलत मान बैठते हैं। फ़िराक के साथ भी ऐसा ही हुआ। उनकी बेबाकी की वजह से लोग उन्हें पसंद नहीं करते थे। फ़िराक में आदमीयत भरपूर थी।

क्षेत्रीय केंद्र के प्रभारी एवं संयोजक **प्रो.संतोष भदौरिया** ने गोष्ठी की प्रस्तावना रखते हुए कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा फ़िराक पर आयोजित यह दूसरा कार्यक्रम है। फ़िराक को उनके अन्तर्विरोधों के साथ उनकी शायरी में अभिव्यक्त साझा संस्कृति के स्वरूप को सामने लाना ही गोष्ठी का उद्देश्य है। गोष्ठी में **अली सरदार जाफ़री** द्वारा निर्मित फिल्म **'फ़िराक गोरखपुरी'** का प्रदर्शन भी किया गया जिसको प्रबुद्धजनों ने काफी सराहा।

गोष्ठी के दौरान इलाहाबाद के तमाम साहित्य प्रेमियों की उपस्थिति में ख्यातनाम रंगकर्मी **श्री ए.के. हंगल** को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। संचालन प्रो.संतोष भदौरिया और स्वागत हिमांशु रंजन ने किया। कार्यक्रम में जियाउल हक, अजित पुस्कल, एहतराम इस्लाम, यश मालवीय, अशुंल त्रिपाठी, सुरेन्द्र वर्मा, नन्दल हितैषी, रविनंदन सिंह, पूनम तिवारी, अनुपम आनंद, हरिशचन्द्र अग्रवाल, संजय जोशी, हरिशचन्द्र पाण्डेय, फ़खरूल करीम, संजय पाण्डेय, शशिभूषण सिंह, अशोक कुमार, नरायण सिंह, रेनू सिंह सहित बड़ी संख्या में साहित्य प्रेमी उपस्थित रहे जिन्होंने इस गोष्ठी को यादगार बनाया।

फोटो कैप्शन- वक्तव्य देते हुए प्रो.संतोष भदौरिया व मंचासीन विद्वत वक्ता।

अमित विश्वास

This document was created using Smart PDF Creator
To remove this message purchase the product at www.SmartPDFCreator.com